आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:31/12/2022; Published:31/01/2023

रीढ़

डॉ. नीता दौलतकर

मूल: कुसुमाग्रज (मराठी)

सरमें आया कोई बरसात ,पहचाना मुझे ,

कीचड से कपडे थे सनेबालों से बह रहा था पानी ,

पल भर बैठाकहा ऊपर देखकर ,फिर हँसा ,

गंगा मैया मेहमान बन आयीगई घरौंदे में रहकर ,

मायके आयी बेटी सी चारों दीवरों में झूम उठी

खाली हाथ जाएगी कैसी पत्नी मात्र रह गयी।

दीवार ढह गईचूल्हा बूझा ,

जो था नहीं था सब ले गयी।

प्रसाद सा आँखों मे

पानी थोड़ा रख गई।

पत्नी को लेकर

सर अब लड़ रहा हूँ

ढई दीवार बनवा रहा हूँ

कीचड मीट्टी निकाल रहा हूँ

जेब के पास हाथ जाते ही मेरे

वह मुस्करा उठा

पैसे की नहीं आस सर

बस एकाकी सा लगा

बिखर गई है गृहस्थी फिर भी

टूटी नहीं रीढ़ की हड्डी

बस हाथ पीठ पर रख कहिए सर

बेटा हिम्मत न हारों लड़ते रहो।

****